गीता कोर्स

पाठ्य पुस्तक

अखण्ड संस्करण
प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय खण्ड संग्रह

कृष्णभावनामृत संघ के संस्थापकाचार्य
कृष्णकृपाश्रीमूर्ति श्रील अभयचरणारविन्द भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद
द्वारा
भगवद-गीता
BHAGVAD-GITA AS IT IS के
अनुसरण में रचित

संकलन : गोवर्धन गोपाल दास

भक्तिवेदान्त बुक ट्रस्ट
श्रीमायापुर, कोलकाता, मुम्बई, न्यूयार्क, लॉस एंजिल्स, लंदन,
सिडनी, पेरिस, रोम, हाँगकाँग

गीता कोर्स टेक्स्ट बुक
हिन्दी

अखण्ड संस्करण : ३००० प्रतियाँ, २०२०

ग्रन्थ-स्वामित्वाधिकार :
१९९८ भक्तिवेदान्त बुक ट्रस्ट
द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित

पत्राचार एवं सम्पर्क :
गीता प्रचार विभाग
(भक्तिवेदान्त गीता अकादमी)
गीता भवन, ईस्कॉन, मायापुर चन्द्रोदय मन्दिर
श्रीमायापुर नदिया, पश्चिम बंगाल
दूरभाष : (०३४७२) २४५०६४

पृष्ठभूमि

हम सभी ने विद्यालय-महाविद्यालय में कुछ हद तक इतिहास, साहित्य, विज्ञान-दर्शन आदि का ज्ञान अर्जन किया है। इस ज्ञान का उपयोग हम अपने जीवन की समस्याओं को सुलझाने तथा हमारी सभ्यता की उन्नति के लिए करते हैं। फिर भी केवल बुद्धिमान मनुष्य ही यह समझ पाते हैं कि जीवन अबतक सफल नहीं हो पाया, जीवन को पूरी तरह समस्यामुक्त नहीं किया गया। इस धरती पर हम देखते हैं कि सबसे सुन्दर गुलाब भी आहिस्ता-आहिस्ता झड़ जाता है। इसी तरह यशस्वी मनुष्य भी अपने प्रिय जड़ शरीर को त्याग कर विदा लेते हैं। बड़े-बड़े सेलिब्रिटी भी अंत में सिर्फ तस्वीर बनकर शोभावर्धन करते हैं। इसलिए हमारी इतनी प्रगति होने पर भी क्या हम कह सकते हैं कि हम समस्यामुक्त हैं। कहाँ हैं आज रवीन्द्रनाथ, किशोर कुमार, सत्यजित राय और रवि घोष? वे तो प्रख्यात व्यक्ति थे पर क्या वे समस्या रहित थे?

इस नश्वर जीवन में हमारी प्रथम समस्या है मृत्यु। हम जीने के लिए बहुत संग्राम कर रहे हैं, इसके लिए हम विज्ञान तथा नए-नए आयामों का उपयोग कर रहे हैं परंतु अन्त में हमें जीवन से विदा लेना पड़ रहा है। जीवन युद्ध में विजित होना ही हमारी नियति है। क्या मृत्युदण्डादेश प्राप्त बन्दी कभी भी कहीं से सुख प्राप्त कर सकता है? निकटतम भवितव्य का डर सदा ही उसके चित्त को परेशान करके रखता है। इसी तरह अस्थिर भौतिक जीवन में, बुढ़ापा, रोग, मृत्यु तथा प्रिय व्यक्तियों के वियोग के चलते कोई यह दावा नहीं कर सकता है कि वह सच में सुखी है। इस विश्व में भौतिक साधनों के विशाल आयोजन के बावजूद भी अगर किसी को पूछा जाए कि क्या वह यथार्थ सुखी है, संतुष्ट है, तो निश्चित ही नकारात्मक उत्तर मिलेगा। सिर्फ भौतिक शरीर की सन्तुष्टि सुनिश्चित होने पर भी मनुष्य सुखी नहीं हो सकता क्योंकि यह शरीर स्थूल है, यह वास्तविक नहीं है।

यद्यपि नित्य, शाश्वत तथा आनन्दमय जीवन ही हमारा ध्येय है, पर वास्तविकता यह है कि कभी भी हमारे शरीर का अस्तित्व खत्म हो सकता है। अब प्रश्न है क्या मृत्यु के पश्चात् भी जीवन का अस्तित्व है? इस महाविश्व में हमारे इस क्षणभंगुर जीवन का अर्थ क्या है? उद्देश्य क्या है? इस प्रकार नश्वर सृष्टि का उद्देश्य क्या है? कौन है इस धरती के सृष्टिकर्ता? दरअसल सारे विश्व में लाखों विद्यालय-महाविद्यालयों के रहते हुए भी वहाँ इन मूलभूत प्रश्नों के उत्तरों की शिक्षा प्रदान नहीं की जाती। परन्तु इस प्रकार की शिक्षा की ही आवश्यकता है। जैसे कोई रडार कम्पासहीन जहाज, दिशाहीन नाविक से परिचालित होकर कभी भी अपने गन्तव्यस्थल की ओर नहीं पहुंच सकता, वैसे ही इन मूलभूत प्रश्नों

के उत्तरों से अनभिज्ञ होकर जीवन और सभ्यता को परिचालित करने से निरर्थकता तथा विपत्तियों को रोका नहीं जा सकता। पूरा विश्व अब इसी खतरे के सामने खड़ा है। यहाँ अब शराबखाना, कसाईखाना, सट्टा-कैसिनों और वेश्यालयों की क्रमशः वृद्धि हो रही है। मनुष्य अब घातक हथियारों के पहाड़ की निर्मिति कर रहे हैं। वह दिन ज्यादा दूर नहीं जब एक और विश्वयुद्ध मनुष्य के बाहरी आडंबरपूर्ण सभ्यता के वास्तविक चेहरे को सही ढंग से प्रकट करेगा।

सृष्टि का सम्यक रूप से उपयोग कैसे करें इसकी शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से जीवों के मित्र परमेश्वर ने वेदों का ज्ञान प्रदान किया। बिना व्यक्ति विशेष द्वारा रचित, अपौरूषेय वेद ही मनुष्य के सारी जिज्ञासाओं का एकमात्र समाधान है। उनके सभी मौलिक प्रश्नों के उत्तर इसमें ही निहित है। वेदों का सार है भगवद्गीता, क्योंकि भगवद्गीता स्वयं परमेश्वर की वाणी है, इसलिए यह विश्वजननी है। विश्व का कोई भी व्यक्ति, कहीं भी, किसी भी समय भगवद्गीता की शिक्षाओं का पालन करके पूर्णानन्दमय, ज्ञानमय, वृद्धावस्था और मृत्युरहित शाश्वत जीवन प्राप्त कर सकता है। इस अस्थिर जीवन तथा हमारी जीवनशक्ति को किस तरह उपयोग करने से हम समस्या रहित पूर्ण दिव्य जीवन प्राप्त कर सकेंगे, इसका एकमात्र मार्गदर्शक है-भगवद्गीता। यही कारण है कि, सभी मनुष्य के लिए एवं मानव सभ्यता के सम्पूर्ण विकास के लिए एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है-भगवद्गीता। भगवद्गीता ही विश्व का एकमात्र ग्रन्थ है, जहाँ प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर भगवान की वाणी संकलित हुई है। अतः भगवद्गीता मानव समाज का संविधान है।

विडम्बना यह है कि, भगवद्गीता के विविध भाष्यकारों ने भगवद्गीता के कथनों को, भगवान श्रीकृष्ण के अभिप्राय को परिवर्तित करके अपने-अपने उद्देश्यों को सिद्ध करने के लिए भगवद्गीता की व्याख्या की है। कोई भगवद्गीता के माध्यम से योग साधना के श्रेष्ठत्व का प्रमाण देने का प्रयास करता है, तो कोई निराकार परमब्रह्म के अनुध्यान को स्थापित करने के लिए गीता श्लोकों को व्याख्या करता है। कई व्याख्याकारों ने श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व को ही प्रतीक बनाकर, 'मैं' अर्थात जीव को ही भगवान बताया है। वे अपने वाक्चातुर्य तथा मिथ्या तत्वज्ञान के माध्यम से सरल पाठकों को अज्ञानता के अंधकार की ओर ले जा रहे हैं। दरअसल ये सब व्याख्याकार श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व से ईर्ष्या करते हैं। वे श्रीकृष्ण के शाश्वत अस्तित्व को स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं। वे श्रीकृष्ण के प्रति भक्ति प्रदर्शन के सर्वश्रेष्ठ मार्ग योगमार्ग की अवज्ञा करके, इसे सेन्टिमेन्टालिज्म या भावुकतावाद बताकर श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व को अस्वीकार करते हैं। इस प्रकार वे मूलतः भक्तिमार्ग को विश्व से विलुप्त करने के लिए अत्यंत उद्विग्न हैं। इसलिए उन्होंने गीता के ऊपर मनमाने भाष्य लिखे हैं। असल में वे स्वयं को श्रीकृष्ण से भी ज्यादा बुद्धिमान समझते हैं। फलतः वे लोगों को गुमराह कर रहे हैं।

भगवद्गीता में स्पष्टत: निर्देशित है कि श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व शाश्वत है, वे शाश्वत परम पुरुष हैं (पुरुषं शाश्वतं दिव्यम्-१०.१२), उनका रूप नित्य है (रूपस्य नित्यम-११.५२), वे निराकार ब्रह्म का आधार हैं (ब्रह्मणां हि प्रतिष्ठाऽहम-१४.२७)। अव्यक्त ब्रह्म की उपसना का परिणाम केवल दु:ख है (अव्यक्ता हि गतिर्दु:खं १२.५)। उन्होंने भगवद्गीता में स्पष्टत: निर्देश दिया है-सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज-१८.६६; अर्थात् समस्त धर्मों का परित्याग करके सिर्फ मेरी ही शरण में आ जाओ। जीवों के परममित्र परमेश्वर भगवान को आत्मसमर्पण करना, यही भगवद्गीता की मूल शिक्षा है, क्योंकि प्रत्येक जीव मूलत: भगवान श्रीकृष्ण का नित्य दास है। भगवान के प्रति जीव के हृदय में स्थित शाश्वत दिव्य प्रेम की अभिव्यक्ति का नाम ही भक्ति है। यही जीव का सनातन कर्तव्य है। सभी मायाबद्ध जीवों के अन्दर यह वृत्ति सुप्त है। उसे विकसित करना ही पूर्णता प्राप्त करने का मार्ग है।

मनुष्य कभी भी कल्पना के जरिए धर्मपन्थ का आविष्कार नहीं कर सकता, क्योंकि धर्म साक्षात भगवान द्वारा दी गई अधिनियमित विधि है- *धर्मं तु साक्षात् भगवद्प्रणीतम्*। परंतु आजकल नए-नए धर्मपंथों तथा अवतारों का आविर्भाव हो रहा है। वास्तव में यह सब धर्म नहीं अपितु 'धर्मस्य ग्लानि' है, धर्म का पतन है। श्रुतिमधुर होने पर भी धर्म की इन सब राहों का अनुसरण करके लोग अंत में सिर्फ असफल ही रहे हैं। यही कारण है कि भ्रान्त मतवाद का शिकार बनकर मनुष्य भगवा वस्त्र पहनकर भी मांसाहार कर रहे हैं।

इसलिए विद्यालय-महाविद्यालयों में भगवद्गीता की शिक्षा प्रदान करना अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु आजकल सिर्फ स्थूल शरीर के इंद्रियों की परितृप्ति पर ही शिक्षा प्रदान करने में ही शिक्षाव्यवस्था सीमाबद्ध है। समग्र विश्व में आज आत्मविश्लेषण मूलक शिक्षा प्रदान करने के लिए कोई विश्वविद्यालय नहीं है; यद्यपि आत्मा ही सबसे महत्वपूर्ण है। आत्माविहीन शरीर चेतनाहीन, मृत, स्थूल एवं नश्वर है।

विश्व में मानव सभ्यता की सारी समस्याओं का मूल कारण है-अपने स्वरूप संबंधित अज्ञानता, स्वयं को चिन्मय आत्मा के रूप में न सोचकर नश्वर स्थूल शरीर को 'मैं' के रूप में सोचना। भगवद्गीता का ज्ञान प्राप्त करके मनुष्य स्वयं को तथा ईश्वर को सम्यक रूप से पहचान सकता है एवं मनुष्य तथा समस्त जीवजगत को ईश्वर का अंश समझकर उन्हें प्यार कर सकता है। अगर विश्व में गीताज्ञान का प्रचार किया जाए तो युद्ध का आतंक धरती से मिट जाएगा। हम सोचते हैं कि सभ्यता क्रमश: उन्नति की ओर जा रही है, पर विश्व में आज शराबखाना, कसाईखाना, जुआ-कैसिनों तथा वेश्यालयों की संख्या बढ़ रही है, छात्र-छात्राओं में नैतिकता विलुप्त हो रही है। अगर भगवद्गीता का ज्ञान समाज में फैल जाए तो इन सब पापों से तथा पाप की प्रवृत्तियों से मुक्ति मिलेगी। हमारे

व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनैतिक, दार्शनिक, आदि मानव सभ्याता की सारी समस्याओं का एकमात्र समाधान है- भगवद्गीता। इसके अतिरिक्त यह कहा जा सकता है कि समग्र मानव सभ्यता या समाज का गठन भगवद्गीता के सार का अनुकरण करके करना चाहिए तभी सभ्यता समृद्ध एवं शांतिपूर्ण बन सकेगी। विश्व के श्रेष्ठ दार्शनिक भगवद्गीता के एकनिष्ठ पाठक हैं।

इससे पहले भगवद्गीता के अंग्रेजी अनुवाद के विविध संस्करणों का पठन करने के बाबजूद भी विश्व में कोई भी शुद्ध भक्त नहीं बन पाया तथा पाप-कर्म से मुक्त नहीं हो पाया। श्रील अभयचरणारविन्द भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद, पूर्ववर्ती आचार्यों के मार्ग का अनुसरण करके अंग्रेजी में 'भगवद्गीता ऐज इट इज' नाम से भगवद्गीता पर भाष्य किए हैं, जो कि समग्र विश्व में क्रान्ति ला रहा है। विगत ३० वर्षों में सौ से अधिक भाषाओ में अनुवादित होकर करोड़ों की संख्या में समग्र विश्व में यह भाष्य वितरित हो चुका है। विश्व के मुख्य शहरों में ४०० से अधिक कृष्णतत्वविज्ञान अनुशीलन केन्द्रों का निर्माण हुआ है। कॉलेज-विश्वविद्यालयों के युवक युवतियाँ भी आकर्षित हो रहे हैं। वे गीता क्लब, युथ फोरम का गठन किए हैं। भारत में भी कृष्ण भावना का क्रान्तिकारक प्रचार हो रहा है। जैसे कि पुना एवं मुम्बई में हजारों छात्र-छात्राए, जिनमें सैकड़ों इंजिनियरिंग एवं मेडिकल के स्टुडेन्ट्स हैं, जो अपने व्यक्तिगत जीवन में भगवद्गीता को अपनाकर प्रचार कर रहे हैं। समग्र विश्व में कृष्णभावनामृत आन्दोलन विकसित हो रहा है।

कोर्स के शिक्षार्थियों के लिए

यद्यपि आपकी प्राथमिक अवधारणा निम्नलिखित हो, फिर भी कृपया इस कोर्स को जरूर पूर्ण करे:-

- भगवद्गीता मनुष्य द्वारा लिखी गई है, अत: यह सिर्फ एक विश्वास है, विज्ञान नहीं। इसका कोई प्रमाणित सत्य नहीं है, इसमें सिर्फ विश्वास की बात है, इसे पढ़ना सिर्फ समय को गवाँना है।
- कुरुक्षेत्र का युद्ध, श्रीकृष्ण, अर्जुन, रथ, सारथी-ये सब रूपक मात्र हैं। इस रूपक के द्वारा ज्ञान प्रदान किया गया है। रूपक नहीं, ज्ञान ही सच है।
- श्रीकृष्ण की सम्पूर्ण पहचान दुष्कर है, असल में वे सिर्फ एक महामानव थे। बाद में वे भगवान के रूप में पूजित हुए।
- श्रीकृष्ण शाश्वत, अमर नहीं है; हमारी तरह उनकी भी जन्म-मृत्यु होती है। अत: वे हमारी तरह ही सामान्य मनुष्य हैं।
- श्रीकृष्ण निर्गुण निराकार ब्रह्म के अस्थायी रूप हैं, आविर्भाव के पूर्व श्रीकृष्ण

निराकार थे और अप्रकट होने के बाद वे पुन: निराकार ब्रह्म के रूप में परिणत हुए थे–यह तथ्य भक्तों के समझ तथा ज्ञान के बाहर है।

- असल में भगवद्गीता में निराकार, निर्विशेष, निर्गुण, अव्यक्त ब्रह्मतत्व ही प्रचारित हुआ है। अर्थात ब्रह्म ही जीव है, जीव और ब्रह्म भिन्न–भिन्न नहीं है।
- मैं ईश्वर हूँ, आप ईश्वर हैं। प्रत्येक मनुष्य ही ईश्वर है।
- भगवद्गीता में योग–साधना अर्थात् अष्टांग योग या ध्यान योग को ही सर्वश्रेष्ठ प्रमाणित किया गया है। आँख बंद करके ज्योतिष सागर में डुबकी लगाकर ध्यान मग्न रहने में ही सार्थकता है।
- गीता में मुख्यत: कर्म–योग की ही शिक्षा प्रदान की गई है। अत: सभी को कर्मवीर होना आवश्यक है। ध्यान, तपस्या, भक्ति आदि निकम्मे भावविलासियों के लिए है।
- देवी–देवताओं में तथा श्रीकृष्ण में कोई अंतर नहीं है। ये सभी ब्रह्म के अंश हैं। अंत में सबकुछ एक अद्वैत स्वरूप है। इसलिए अन्य देवी–देवताओं की अर्चना और श्रीकृष्ण की अर्चना में कोई अंतर नहीं है।
- समस्त प्रकार की उपासना का परिणाम एक ही है। जैसे सभी नदियाँ समुद्र में विलीन होती है, वैसे ही सभी उपासनाएँ एक ही जगह पर समाप्त होती है।
- विज्ञान की प्रगति के साथ मनुष्य की अज्ञानता भी कम हो जाएगी। जो समस्याएँ मनुष्य को दु:ख पहुँचाती है, वह सभी समाप्त हो जाएगी।
- ईश्वर एक सर्वव्यापी शक्ति है, इसलिए वे अनंत असीम हैं और जो अनंत और असीम हैं, उसका कोई रूप या व्यक्तित्व नहीं हो सकता। इसलिए ईश्वर रूपहीन, व्यक्तित्वहीन, मन–बुद्धिहीन और देहान्द्रियहीन है।
- असल में प्रकृति के प्रभावी नियमों से ही सभी घटनाएँ घटित हो रही हैं। इन सब घटनाओं के अपने आप घटित होने से यह प्रतीत हो रहा है कि इन सब का नियंत्रक नहीं है। इसलिए नियंत्रक ईश्वर का अस्तित्व संदेहात्मक है।
- इस धरती में दृश्यमान चीजों के अलावा दूसरा कुछ भी नहीं है। यह जगत ही सब कुछ है, यह जीवन ही सब कुछ है, इसलिए जब तक जीवन है तब तक खुश रहकर जीना चाहिए।
- जड़ पदार्थ के क्रिया–प्रक्रिया से जीवन का निर्माण होता है। मृत्यु के उपरांत सबकुछ समाप्त हो जाता है। इसलिए भगवद्गीता पढ़ने से या न पढ़ने से कोई फर्क नहीं पड़ता।

उपर्युक्त सारे वक्तव्य असत्य हैं और उन सब गलत मतवादों के विनाश के लिए पाँच हजार वर्ष पहले भगवद्गीता कहा गया था।

क्या आप भी ऐसी अवधारणा के शिकार हैं या दूसरों से ऐसी ही बातें सुन रहे हैं? तो खुले दिमाग से भगवद्गीता को पढ़िए और जानिए कि इसमें क्या कहा गया है।

ग्रेड-१ के पाठ्य पुस्तक में श्लोक नहीं है। यह मुख्य रूप से सिर्फ प्राथमिक परिचय है। यह मूल 'भगवद्गीता ऐज ईट इज' या उसका अनुवाद नहीं है। इसका मूलग्रन्थ ग्रेड-टू का पाठ्य पुस्तक है, जहाँ प्रत्येक श्लोक एवं उसके सभी शब्दों का अनुवाद प्रदान किया गया है। शिक्षार्थी अगर इन दोनों कोर्स का अध्ययन करें तो भगवद्गीता में दिए ज्ञान से सम्पूर्ण रूप से अवगत हो सकेंगे। इसके लिए हम सभी प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तैयार हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षार्थी भगवद्गीता ग्रन्थ का भी अध्ययन कर सकते हैं। सम्पूर्ण वैज्ञानिक तरीके से इसमें सब कुछ स्पष्ट रूप से बताया गया है।

भगवद्गीता समस्त वेद एवं वेदान्त का सार है। यह एक महत्वपूर्ण तथा विश्ववंदित ग्रन्थ है। इसलिए जागतिक कर्म व्यस्तता तथा सांसारिक असुविधा रहते हुए भी कृपया यह कोर्स करने के अवसर का उपयोग करें। परमेश्वर भगवान श्रीकृष्ण के श्रीमुख से निकला हुआ यह दिव्य वार्तालाप ही हम सबके लिए परम आवश्यक संदेश है। यह पाठ्यपुस्तक जीवन के अमृत तथा परम विज्ञान पर आधारित है। आईए, हम सब इसका रसास्वादन करें।

यह कोर्स कैसे करें

भगवद्गीता में अठारह अध्याय है। इस पाठ्यपुस्तक में हर छह अध्यायों को लेकर एक खण्ड बनाया गया है। आप प्रथम खण्ड से शुरूआत करें, यानी कि पहले छह अध्यायों को पढ़ें। प्रश्नमाला के प्रश्नों का उत्तर ढूँढने के लिए अभ्यास करें। इसके पश्चात भेजे गए प्रश्नपत्र के उत्तरों को लिखकर भेजें। चूँकि प्रश्न अति सरल है, आपको सरलता से ही उत्तर मिल जाएंगे। अगर कोई समस्या हो तो हमें (नौ बज कर तीस मिनट से लेकर बारह बजकर तीस मिनट के बीच) फोन करें। आपके उत्तरपत्र का मूल्यांकन करके आपको वापस भेजा जाएगा, इसके लिए आपको अतिरिक्त खर्च करने की आवश्यकता नहीं। उसके साथ ही अगले खण्ड का प्रश्नपत्र भेजा जाएगा। यद्यपि ४० प्रतिशत अंक ही पास करने के लिए आवश्यक है, परन्तु अधिक तौर पर शिक्षार्थी ६० से ७० प्रतिशत अंक प्राप्त करते हैं। अंत में आपको प्रमाणपत्र एवं उपहार दिया जाएगा। वर्ष में एक बार कोर्स के शिक्षार्थीओं के लिए सम्मेलन आयेजित होता है। सभी शिक्षार्थी इस में सादर आमंत्रित है।

हम इस कोर्स के शिक्षार्थीओं को शुभकामनाएँ प्रदान करते हैं।

भक्ति वेदान्त गीता अकादमी

इस जगत में दो सर्वश्रेष्ठ गीतकाव्य है, उनमें एक है भगवद्गीता।

— टी. एस. एलियट

(आधुनिक अंग्रेजी कविता के जनक)

भगवान ने भगवद्गीता पढ़ने के लिए मुझे दीर्घ-जीवन प्रदान किया। मैं भगवान को इसलिए धन्यवाद करता हूँ ।

— डब्ल्यू. वी. हमबाल्टड

(प्रख्यात दार्शनिक)

मैं ज्ञान की असीमितता एवं प्रकृति के उद्घोष की व्यापकता उजागर करने के लिए प्रयासरत हूँ।

— अल्बर्ट आइनस्टाईन

सुबह मैं अपनी बुद्धि को भगवद्गीता के अलौकिक एवं अद्भुत दर्शन के अधीन करता हूँ क्योंकि इसकी तुलना में हमारी वर्तमान आधुनिक शिक्षा एवं अन्य सारे ज्ञान ग्रन्थ मुझे अतीव क्षुद्र, नगण्य लगते हैं।

—थारो

(विश्वविख्यात दार्शनिक)

प्रस्तावना

भारतवर्ष एक धार्मिक देश है, जहाँ बहुत से धर्म ग्रन्थों का प्रचलन है। इस देश में अनेक स्थानों पर अनेकानेक धर्मसभाएँ आयोजित होती रहती हैं। किन्तु इतना सबकुछ होते हुए भी भारत में भ्रष्टाचार, अराजकता, कुसंस्कृति और नास्तिकता की वृद्धि क्यों हो रही है?

साधारण लोगों का यह सरल प्रश्न वास्तव में अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस समस्या का यथोचित समाधान करने की नितान्त आवश्यकता है।

हमारे देश भारतवर्ष में धर्मग्रंथों का अत्यधिक प्रचार है। आधुनिक युग के तथाकथित धार्मिक लोगों ने गीता आदि वैदिक ग्रंथों पर विभिन्न भाष्यों की रचना की है। अनेक तथाकथित धर्मगुरुओं तथा प्रचारकों का उद्भव हुआ है। किन्तु दुःख का विषय यह है कि ये समस्त प्रचारकगण धर्मग्रंथों के यथार्थ उद्देश्य को छिपा कर अपने निजी मंतव्य को प्रस्तुत करते हैं। उदाहरण-स्वरूप, भगवद्गीता की शिक्षा का मूल उद्देश्य है (जो इस ग्रंथ में सुस्पष्ट रूप से वर्णित है)-भगवान् श्रीकृष्ण के प्रति आत्मसमर्पण करना, जो प्रत्येक जीव का कर्तव्य है।

भगवान् के श्रेष्ठ भक्त एवं सखा अर्जुन ने एक बद्ध जीव के समान अभिनय किया है। उनके माध्यम से भगवान् श्रीकृष्ण हमारे जैसे बद्ध जीवों के उद्धार हेतु गीताज्ञान प्रदान किया है। उन्होंने गीता के निष्कर्ष में कहा है-

सर्वगुह्यतमं भूयः शृणु मे परमं वचः।
इष्टोऽसि मे दृढमिति ततो वक्ष्यामि ते हितम्।।

(गीता १८.६४)

''चूँकि तुम मेरे अत्यंत प्रिय मित्र हो, अतएव मैं तुम्हें अपना परम आदेश, जो सर्वाधिक गुह्यज्ञान है, बता रहा हूँ। इसे अपने हित के लिए सुनो।''

अर्जुन को यह कहकर, भगवान श्रीकृष्ण उसे सर्वश्रेष्ठ शिक्षा दे रहे हैं। अगले दो श्लोकों में उन्होंने आत्मसमर्पण करने की विधि समझाई है।

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे।।

(गीता १८.६५)

''सदैव मेरा चिन्तन करो, मेरे भक्त बनो, मेरी पूजा करो और मुझे नमस्कार करो। इस प्रकार तुम निश्चित रूप से मेरे पास आओगे। मैं तुम्हें वचन देता हूँ, क्योंकि तुम मेरे परम प्रिय मित्र हो।''

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

(गीता १८.६६)

''समस्त प्रकार के धर्मों का परित्याग करके मेरी शरण में आ जाओ। मैं समस्त पापों से तुम्हारा उद्धार कर दूँगा। डरो मत!''

भगवान् श्रीकृष्ण विभिन्न योगपद्धतियों का वर्णन करके अंत में कहते हैं— *यथेच्छसि तथाकुरू,* 'हे अर्जुन, तुम्हें जो ठीक लगे, वही करो।' अर्जुन ने यथार्थ शिष्य के समान भगवान् कृष्ण के उपरोक्त सिद्धान्त को ग्रहण करके आत्मसमर्पण कर दिया।

श्रीकृष्ण ने अर्जुन के व्यक्तिगत स्वतंत्रता को भंग न करके, उसके मंगल के उपाय पर विचार करने को कहा था। अर्जुन ने बुद्धिमान शिष्य के समान कहा था- *करिष्ये वचनं तव,* 'आप जैसा कहेंगे मैं वैसा ही करुँगा-आपके निर्देश का पालन करूँगा।' इस प्रकार हम यह शिक्षा ले सकते हैं कि गीताज्ञान की प्राप्ति की परम सार्थकता भगवान् श्रीकृष्ण के चरण कमलों में आत्मसमर्पण करना है।

भगवद्गीता के अंत में व्यास-शिष्य संजय ने सब कुछ सुनाने के बाद धृतराष्ट्र को अपना निष्कर्ष सुनाया—

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।

(गीता १८.७८)

जहाँ योगेश्वर कृष्ण हैं और जहाँ परम धनुर्धर अर्जुन है, वहीं ऐश्वर्य, विजय, अलौकिक शक्ति तथा नीति भी निश्चित रूप से रहती है। ऐसा मेरा मत है।

इससे यह स्पष्ट रूप से प्रतीत होता है कि भगवान् के श्रीचरणों में आत्मसमर्पण करने में ही जीव का परम मंगल है। किन्तु यह अत्यंत दुःख का विषय है कि वर्तमान युग के तथाकथित प्रचारक एवं गुरुगण अपना उद्देश्य पूर्ण करने हेतु विभिन्न कपोलकल्पित बातें कहते फिरते हैं। जैसे, कोई-कोई परब्रह्म को निराकार कहता है,

कोई कहता है पंचपांडव एवं कुरुक्षेत्र जैसा का कुछ नहीं है; पंच-इंद्रियाँ ही पंचपांडव है और शरीर ही कुरुक्षेत्र है। किसी के अनुसार गीता का उद्देश्य जन्मभूमि या देश अथवा देवी-देवताओं के प्रति आत्मसमर्पण करना है। कोई कहता है-'हमें कृष्ण के प्रति नहीं, अपितु कृष्ण के अंदर के भगवान के प्रति समर्पण करना है।' तो कोई कहता है कि गीता के कुछ चुने हुए श्लोक ही ग्रहणीय हैं, बाकी बेकार हैं। और कोई कहता है मैं ही भगवान् हूँ, मेरे प्रति समर्पण करो.....इत्यादि।

इस प्रकार भगवद्गीता के मूल अर्थ की अनर्थकारी व्याख्याओं से सुसज्जित ग्रंथों के प्रचार-प्रसार द्वारा हमारा देश किस पकार यथार्थ रूप से लाभान्वित हो सकता है? इसीलिए तो भारतवर्ष में गीता के विस्तृत प्रचार के बावजूद भी समाज का पतन हो रहा है। पूर्वकाल में गुरुपरम्परा-क्रम से प्राप्त ज्ञान पाकर भक्त एवं महान आचार्यगण शास्त्रों के शुद्ध भाष्यों की रचना करते थे तथा समाज को अध:पतित होने से बचाकर भगवत-उन्मुखी बनाते थे। हम सब का कर्तव्य है कि हम उन्हीं महान आचार्यगणों की शुद्ध-भक्ति अनुकूल व्याख्या का अनुसरण करें। तभी हमारा जीवन सार्थक होगा।

वर्तमान में भगवद्गीता की व्याख्याएँ किसी राजनैतिक नेता या भौतिकवादी दार्शनिक या व्यवसायिक लेखक द्वारा प्रकाशित हो रही है। केवल भारत में ही नहीं समग्र विश्व-समाज में गीता के कई विभ्रांतकारी संस्करण प्रकाशित हुए हैं। किन्तु उन समस्त ग्रंथों का अध्ययन करके सारे विश्व में एक व्यक्ति भी कृष्ण-भक्त न बन पाया।

भगवान की अपार करुणा के फलस्वरूप ब्रह्म-मध्व-गौड़ीय सम्प्रदाय में आधुनिक युग के युगान्तकारी महान आचार्य इस्कॉन के संस्थापक श्रील अभयचरणारविन्द भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद ने पूर्ववर्ती आचार्यों के पदचिह्नों का अनुसरण करते हुए भगवद्गीता के जिस अंग्रेजी भाष्य की रचना की है, वह सारी पृथ्वी पर सैकरों भाषाओं में प्रकाशित होकर लाखों-करोड़ों मनुष्यों को कृष्णभक्ति-परायण बनाकर जीवन को सार्थक बनाने का सुअवसर प्रदान कर रही है। यह भक्तिवेदांत भाष्य सारे विश्व के लोगों को व्यभिचार, हिंसा, नशा एवं जुआ इत्यादि के दुर्गुणों से मुक्त करके वेदों की महान शिक्षा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का वातावरण बना रहा है। यह गीता ग्रंथ मनुष्यों को 'सादा जीवन उच्च विचार' की शिक्षा दे रहा है एवं दिशाहीन और पथभ्रष्ट छात्रों तथा युवाओं का यथार्थ मार्गदर्शन कर रहा है। इस प्रकार

भगवद्गीता जीवन के चरम उद्देश्य (कृष्णप्रेम) तक पहुँचाने के साथ-साथ समाज का सम्पूर्ण मंगल भी कर रही है।

विगत् ३० वर्षों से इस्कॉन के प्रयास से श्रील प्रभुपाद के भाष्य-युक्त गीताग्रंथ का सौ से भी अधिक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है एवं अब तक ४५ करोड़ से भी अधिक संख्या में प्रकाशित होकर सबका उपकार कर रहा है। हमारे देश के अनेक लोग सोचते हैं-''हम तो सब जानते हैं, अब और क्या पढ़ें?'' इस प्रकार स्वयं को सर्वज्ञ मानकर, अथवा किसी विशिष्ट धार्मिक संस्था से ही अपने को आबद्ध रखने हेतु, या फिर यथार्थ शिक्षा के अभाव में बहुत से मनुष्य भगवत-तत्व या कृष्णभक्ति की प्राप्ति के उपाय के सम्बंध में अनजाने रह गये हैं। अत: इस पुण्यभूमि भारतवर्ष में जन्म ग्रहण करके भी चैतन्य महाप्रभु द्वारा प्रदत्त भगवत-प्रेम से अनेक लोग वंचित रह गए हैं, जैसे कि कोई व्यक्ति स्टेशन के पास रहकर भी ट्रेन नही पकड़ पाता है।

वर्तमान समाज की आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र-छात्रागण तथा युवावर्ग जिस प्रकार पथभ्रष्ट एवं विभ्रान्त हो रहे है, उससे देश के अन्धकारमय भविष्य का अनुमान सभी लगा सकते हैं। केवल युवावर्ग ही नहीं, प्रत्येक मनुष्य द्वारा इस गीताज्ञान को समझकर जीवनयापन करने की आवश्यकता है। समाज के हर मनुष्य को गीताज्ञान का व्यवहारिक महत्व समझाने हेतु इस 'गीता अध्ययन कोर्स' के कार्यक्रम का शुभारम्भ हो रहा है।

विनीत
श्रीमद् भक्तिपुरूषोत्तम स्वामी
निर्देशक, प्रचार विभाग
श्रीधाम मायापूर

इस विशेष संकलन की कुछ विशिष्टता

यह पुस्तक पूरी तरह कृष्णकृपाश्रीमूर्ति श्रील अभयचरणारविन्द भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद कृत 'श्रीमद् भगवद्गीता यथारूप' ग्रन्थ के अनुसरण में संकलित हुआ है।

मूल ग्रन्थ में प्रत्येक संस्कृत श्लोक, श्लोकों के प्रत्येक शब्दों के अर्थ, प्रत्येक श्लोक का अनुवाद एवं विषयवार भाष्य तथा तात्पर्य प्रदान किया गया है। पाठक गीता कोर्स ग्रेड-२ में इस अनमोल ग्रन्थ को पाठ्यपुस्तक के रूप में अध्ययन करेंगे। यह संकलित पुस्तक मूल पुस्तक का सरल एवं संक्षिप्तसार है। यहाँ मूल श्लोक को न देकर इसके सरल अनुवादों को दिया गया है। इस पुस्तक के 'विश्लेषण' श्रील प्रभुपाद कृत पुस्तक के तात्पर्य समूह का सरल सार है।

ग्रेड-१ में इस पुस्तक का अध्ययन तथा ग्रेड-२ में मूल पुस्तक का अध्ययन करने से पाठक गीता तत्वज्ञान को विस्तृत रूप से आत्मसात करेगा।

प्रश्नमाला एवं प्रश्नपत्र के सारे प्रश्नों के उत्तर पुस्तक के अन्दर ही है। प्रत्येक अध्याय को पढ़कर शिक्षार्थी को सभी उत्तर आसानी से मिल जाएँगे।

मंगलाचरण

ॐ अज्ञानतिमिरांधस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरून्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।
श्रीचैतन्यमनोऽभीष्टं स्थापितं येन भूतले।
स्वयं रूपः कदा मह्यं ददाति स्वपदान्तिकम्।।

अज्ञानता के गहन अंधकार में मेरा जन्म हुआ था, और मेरे गुरूदेव ने ज्ञान की ज्योति से मेरी आँखें खोल दी। मैं उन्हें सादर प्रणाम करता हूँ।

श्रीमद् रूप गोस्वामी प्रभुपाद, जो श्रीचैतन्य महाप्रभु की अभिलाषा पूर्ण करने के लिए इस धरती पर अवतीर्ण हुए हैं, कब मुझे अपने श्रीचरणकमलों का आश्रय प्रदान करेंगे ?

वन्देऽहं श्रीगुरोः श्रीयुतपदकमलं श्रीगुरुन वैष्णवांश्च।
श्रीरूपं साग्रजातं सहगणरघुनाथान्वितं तं सजीवम्।।
साद्वैतं सावधूतं परिजनसहितं कृष्णचैतन्यदेवम्।
श्रीराधाकृष्णपादान् सहगणललिता-श्रीविशाखान्वितांश्च।।

मैं-अपने गुरुदेव एवं सभी वैष्णवों के चरणकमलों में सादर नमस्कार करता हूँ। मैं श्रीरूप गोस्वामी, उनके अग्रज श्रीसनातन गोस्वामी एवं श्रीरघुनाथ दास, श्रीरघुनाथ भट्ट, श्रीगोपाल भट्ट एवं श्रील जीव गोस्वामीजी के चरणकमलों में सादर प्रणाम निवेदन करता हूँ। मैं श्रीमती ललिता-विशाखा के साथ श्रीमती राधारानी एवं श्रीकृष्ण के चरणकमलों में सादर नमस्कार करता हूँ।

नमो महावदन्याय कृष्णप्रेमप्रदायते।
कृष्णाय कृष्णचैतन्य नाम्ने गौरत्विषे नमः।।

हे महावदन्याय अवतार! आप स्वयं श्रीकृष्ण हैं तथा श्रीचैतन्य महाप्रभु के रूप में अवतीर्ण हुए हैं। आप दिव्य कृष्णप्रेम प्रदान करते हैं। हम आपको श्रद्धासहित प्रणाम अर्पण करते हैं।

हे कृष्ण करुणासिन्धो दीनबन्धो जगतपते।
गोपेश गोपिकाकान्त राधाकान्त नमोऽस्तु ते।।

हे कृष्ण! आप करुणा के सिन्धु दुखियों के सखा एवं इस जगत के उद्गम है। आप गोपियों के स्वामी एवं श्रीमती राधाराणी के प्रेमी हैं। मैं आपके चरणकमलों में श्रद्धासहित प्रणाम निवेदन करता हूँ।

तप्तकांचनगौरांगि राधे वृन्दावनेश्वरि।
वृषभानुसुते देवी प्रणमामि हरिप्रिये।।

श्रीमती राधारानी, जिनकी अंग कांति पिघले सोने की तरह है, जो वृन्दावन की महाराणी, महाराज वृषभानु की कन्या एवं श्रीकृष्ण की प्रेयसी हैं–उनके चरण कमलों में मैं सादर प्रणाम करता हूँ।

वाञ्छाकल्पतरूभ्यश्च कृपासिन्धुभ्य एव च।
पतितानां पावनेभ्यो वैष्णवेभ्यो नमो नमः।।

सभी वैष्णव भक्तवृन्द, जो कल्पवृक्ष की तरह सभी की मनोकामना पूर्ण करने में समर्थ हैं, करुणा के सागर एवं पतितो के उद्धारक हैं, उन सभी के चरणकमलों में मैं श्रद्धासहित नमन अर्पण करता हूँ।

श्रीकृष्णचैतन्य प्रभु नित्यानन्द
श्रीअद्वैत गदाधर श्रीवासादि गौर भक्तवृन्द।।

श्रीकृष्ण चैतन्य, प्रभु नित्यानन्द, श्रीअद्वैत आचार्य, श्रीवासादि सभी गौरभक्तवृन्दों के चरणकमलों मैं श्रद्धासहित नमन अर्पण करता हूँ।

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।।